**E-ISSN:** 2664-603X
**P-ISSN:** 2664-6021
IJPSG 2025; 7(4): 08-16
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 13-01-2025
Accepted: 14-02-2025

**रवि वर्मा**
राजनीति विज्ञान, उत्तर प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
**रवि वर्मा**
राजनीति विज्ञान, उत्तर प्रदेश, भारत

# फेक न्यूज़ और चुनावी लोकतंत्र पर इसका प्रभाव

## रवि वर्मा

**DOI:** https://doi.org/10.33545/26646021.2025.v7.i4a.476

**सारांश**

फेक न्यूज़ (झूठी खबरें) लोकतन्त्रीय व्यवस्थाओं के लिए एक व्यापक समस्या बन चुकी है। विश्व में डिजिटल क्रांति से सूचनाओं का आदान-प्रदान तो अत्यंत सरल एवं सहज हो गया है, परंतु इसी के साथ गलत सूचनाओं (फेक न्यूज़) के प्रसार में अत्यंत तीव्रता भी देखने को मिली है। चुनावी लोकतंत्र, जो निष्पक्षता तथा पारदर्शिता, की प्रक्रिया पर आधारित होता है, लेकिन यह अब झूठी खबरों से बहुत अधिक प्रभावित हो रहा है। इस रिसर्च पेपर के माध्यम से झूठी खबरों का चुनावी प्रक्रिया पर प्रभाव, इसके प्रसार के तरीकों तथा मतदाताओं और समाज पर पड़ने वाले प्रभावों और इसको नियंत्रित करने के लिए किए गए प्रयासों का गहराई से विश्लेषण करता है। तथा इसके साथ ही, यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, मीडिया संगठनों, सोशल मीडिया कंपनियों और आम जन मानस के लिए संभावित समाधान प्रस्तुत करता है।

कूट शव्द: पारदर्शिता, अध्ययन, नीति-निर्माताओं

## प्रस्तावना

किसी भी लोकतंत्र की बुनियाद उस देश के नागरिकों की लोकतन्त्रीय सक्रियता पर निर्भर होती है। तथा चुनाव किसी भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया का प्रमुख केंद्र होते हैं, जहां पर मतदाता अनेकों दलों और विभिन्न उम्मीदवारों की विचारधाराओं,नीतियों और कार्यों तथा कार्यशैली के आधार पर निर्णय लेते हैं। परन्तु जब मतदाताओं के मध्य भ्रामक सूचनाओं का प्रसार होता है तो मतदाता फेक न्यूज के प्रभाव में आ जाते हैं, जिसके कारण उनकी निर्णय करने की प्रक्रिया में परिवर्तन देखने को मिलता है।

आधुनिक राजनीति में फेक न्यूज़ केवल झूठी खबरें ही नहीं हैं, बल्कि यह अनेकों राजनीतिक दलों की एक सफल तरीका बन चुका है, जिनका उद्देश्य

किसी विशेष परिस्थिति में अपने समर्थक राजनीतिक दल, विचारधारा या नेता को फायदा पहुंचाना होता है तथा फेंक न्यूज का उपयोग अनेकों विरोधी राजनीतिक दलों,विचारधारा, या नेता को नुकसान पहुंचाने के लिए भी किया जा रहा है अब यह केवल मतदाताओं तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह अनेकों लोकतांत्रिक संस्थाओं में अविश्वास उत्पन्न करता है और समाज में हिंसा को जन्म देने का प्रमुख कारण बन सकता है।

- फेक न्यूज़ की परिभाषा और प्रकार (Definition & Types of Fake News)
- फेक न्यूज़ (Fake News) का अर्थ है ऐसी खबरें, सूचनाएँ या मीडिया सामग्री जो जानबूझकर गलत या भ्रमित करने वाली होती हैं, ताकि किसी विशेष उद्देश्य को बढ़ावा दिया जा सके, जैसे किसी व्यक्ति, संगठन या विचारधारा को लाभ पहुँचाना या किसी की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाना। फेक न्यूज़ आमतौर पर सोशल मीडिया, वेबसाइट्स, और अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से तेजी से फैलती है।
- फेक न्यूज़ की परिभाषा को समझने के लिए कुछ मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:
- **जानबूझकर गलत सूचना:** फेक न्यूज़ आमतौर पर जानबूझकर बनाई जाती है ताकि लोगों को गलत जानकारी दी जा सके। इसका उद्देश्य किसी विशेष एजेंडे को बढ़ावा देना हो सकता है।
- **भ्रामक हेडलाइन और कंटेंट:** फेक न्यूज़ में अक्सर ऐसे आकर्षक और चौंकाने वाले हेडलाइंस का इस्तेमाल किया जाता है, जो असल खबर से बहुत दूर होते हैं। इन हेडलाइनों के द्वारा लोग उत्सुक होते हैं और खबर को बिना जांचे-पढ़े साझा कर देते हैं।
- **सोशल मीडिया का प्रभाव:** आजकल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर फेक न्यूज़ का प्रसार तेजी से हो रहा है। वायरल हो जाने पर ये खबरें बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँच जाती हैं, जिससे वास्तविकता और झूठ के बीच अंतर समझना मुश्किल हो जाता है।
- **उद्देश्य:** फेक न्यूज़ का उद्देश्य विभिन्न हो सकता है - राजनीति में
- किसी उम्मीदवार का समर्थन या विरोध करना, किसी उत्पाद या सेवा को बढ़ावा देना, या फिर समाज में भ्रम फैलाना।
- **स्रोत का अभाव:** फेक न्यूज़ में अक्सर साक्षात्कार, तथ्यों और प्रामाणिक स्रोतों का अभाव होता है। इसे बिना किसी प्रमाण के प्रचारित किया जाता है।
- फेक न्यूज़ से बचने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम किसी भी खबर को साझा करने से पहले उसके स्रोत की पुष्टि करें और इसके तथ्य की जांच करें।

## झूठी सूचना

"झूठी सूचना (Misinformation) वह जानकारी है जो किसी विशेष संदर्भ में गलत होती है और जिसे प्रायः बिना किसी दुराचारी उद्देश्य के साझा किया जाता है। यह गलत तथ्यों या विचारों पर आधारित हो सकती है, जो किसी व्यक्ति, समूह, या घटना के बारे में भ्रामक या असत्य विचार प्रस्तुत करती है। झूठी सूचना आमतौर पर जानबूझकर प्रचारित नहीं की जाती, लेकिन यह तेजी से फैलती है और समाज में गलत धारणाओं को उत्पन्न कर सकती है।"

इस प्रकार, झूठी सूचना का प्रसार सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव डाल सकता है, क्योंकि यह लोगों के निर्णयों और विश्वासों को प्रभावित करती है। समाज में अनेकों भ्रामक खबरें व्याप्त हैं जिनका उद्देश्य समाज में असत्य या झूठी खबरों को इस प्रकार से प्रस्तुत करना है जिससे लोगों में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाए और राजनीतिक दल अपना उद्देश्य पूरा कर सकें।

**ग़लत संदर्भ में प्रस्तुत जानकारी**

"गलत संदर्भ में प्रस्तुत जानकारी (Misrepresentation of Information) वह प्रक्रिया है जिसमें किसी जानकारी को इस तरह से प्रस्तुत किया जाता है कि उसका वास्तविक अर्थ या उद्देश्य विकृत हो जाता है। यह जानकारी जानबूझकर या अनजाने में संदर्भ से बाहर, पक्षपाती, या गलत तरीके से साझा की जाती है, जिससे प्राप्तकर्ता को गलत समझ या निर्णय लेने की संभावना होती है। गलत संदर्भ में प्रस्तुत जानकारी समाज, मीडिया, या शैक्षिक संदर्भों में गंभीर प्रभाव डाल सकती है, क्योंकि यह प्रासंगिक तथ्यों की सही व्याख्या को विकृत कर देती है।"

सोशल मीडिया तथा अनेकों प्लेटफॉर्मों पर विभिन्न तरह की खबरें उपलब्ध है परंतु राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनेकों फोटो तथा वीडियो को इस तरीके से काट छांट कर प्रस्तुत किया जाता है कि वह वीडियो या खबर वर्तमान संदर्भ में गलत धारणा उत्पन्न करें।

**प्रोपेगेंडा**

"प्रोपेगेंडा वह जानबूझकर प्रसारित की गई सूचना या विचारों का संग्रह है, जिसे किसी विशेष विचारधारा, आदर्श, या लक्ष्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तैयार किया जाता है। इसमें आमतौर पर तथ्यों को चुना, विकृत या प्रस्तुत किया जाता है ताकि दर्शकों या समाज को किसी विशेष दृष्टिकोण की ओर आकर्षित किया जा सके। प्रोपेगेंडा का उद्देश्य न केवल जानकारी देना, बल्कि लोगों के विचार, विश्वास और दृष्टिकोण को प्रभावी ढंग से प्रभावित करना होता है। यह एक रणनीतिक प्रक्रिया होती है जिसमें भावनाओं, पक्षपाती सूचनाओं और प्रचार का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि किसी समूह या व्यक्ति के विचारों को मजबूती से स्थापित किया जा सके।"यहएक संज्ञानात्मक रणनीति है, जिसमें किसी विशेष विचारधारा, राजनीतिक उद्देश्य, या सामाजिक बदलाव को बढ़ावा देने के लिए जानबूझकर सूचनाओं को संकलित और प्रसारित किया जाता है। इसमें तथ्यों को कभी-कभी विकृत किया जाता है, या चयनित रूप से प्रस्तुत किया जाता है, ताकि लक्ष्य समूह की सोच और विचारधारा को प्रभावित किया जा सके। प्रोपेगेंडा का मुख्य उद्देश्य लोगों को किसी विशेष दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करना है, और यह आमतौर पर भावनाओं को उत्तेजित करने, पक्षपाती दृष्टिकोण प्रस्तुत करने और स्वीकृति प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया जाता है।"

जब किसी निश्चित उद्देश्य के लिए किसी अफवाह या झूठी खबर को विस्तृत पैमाने पर इस तरह फैलाया जाता है कि वह खबर समाज की दृष्टि में सत्य की तरह व्याप्त हो जाए।

**डीपफेक वीडियो**

डिजिटल क्रांति के बाद आधुनिक तकनीकी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके अनेकों वीडियो को एडिट करके किसी अन्य की आवाज एवं चित्र को बदल दिया जाता है जिसका उपयोग राजनीतिक दल अपने लाभ एवं विरोधी दल को लोकतांत्रिक या सामाजिक क्षति पहुंचाने के लिए करते हैं

**फेक न्यूज़ और चुनावी लोकतंत्र पर प्रभाव**

**परिभाषा:** "फेक न्यूज़ और चुनावी लोकतंत्र पर प्रभाव एक महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र है, जिसमें फेक न्यूज़ का चुनावी प्रक्रिया और लोकतांत्रिक संस्थाओं पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों की समीक्षा की जाती है। फेक न्यूज़ वह गलत, भ्रामक या जानबूझकर विकृत सूचना है जिसे चुनावी संदर्भ में किसी विशेष राजनीतिक एजेंडे को बढ़ावा देने के उद्देश्य से फैलाया जाता है। चुनावी लोकतंत्र में, जहां मतदाता सूचित निर्णय लेकर सरकार के गठन में योगदान करते हैं, फेक न्यूज़ इस सूचित निर्णय लेने की प्रक्रिया को

विकृत कर सकती है। फेक न्यूज़ मतदाताओं की सोच और विचारों को प्रभावित करके चुनावी परिणामों को अनावश्यक रूप से बदल सकती है, जिससे लोकतांत्रिक प्रणाली की विश्वसनीयता और वैधता पर खतरा उत्पन्न होता है।"

"फेक न्यूज़ और चुनावी लोकतंत्र के बीच संबंध में यह देखा गया है कि फेक न्यूज़ चुनावी प्रक्रिया के निष्पक्षता, पारदर्शिता और प्रामाणिकता को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है। चुनावों के दौरान राजनीतिक पार्टियाँ, उम्मीदवार, और अन्य समूह फेक न्यूज़ का इस्तेमाल मतदाताओं को गुमराह करने, उनकी राय बदलने या विरोधी उम्मीदवार की छवि को नष्ट करने के लिए करते हैं। इस प्रकार की जानकारी चुनावी परिणामों को विकृत कर सकती है, जिससे लोकतांत्रिक संस्थाओं और चुनावी प्रक्रिया पर लोगों का विश्वास कम हो जाता है। इसके अलावा, फेक न्यूज़ की बढ़ती समस्या चुनावी लोकतंत्र में असमानता को जन्म दे सकती है, जहां कुछ समूह अपनी झूठी जानकारी के माध्यम से जनमत को प्रभावित करते हैं, जबकि अन्य पारदर्शिता और सच्चाई के आधार पर चुनाव में भाग लेते हैं।"

इस प्रकार, फेक न्यूज़ चुनावी लोकतंत्र में जनसमूहों के विचारों और विश्वासों को प्रभावित करने वाली एक गंभीर चुनौती बन गई है। यह न केवल चुनावी परिणामों को विकृत करती है, बल्कि लोकतंत्र की मूल प्रवृत्तियों–समानता, निष्पक्षता और स्वतंत्रता–को भी खतरे में डाल सकती है।

**मतदाताओं के निर्णय लेने की प्रक्रिया पर प्रभाव**

**परिभाषा:** "मतदाताओं की निर्णय लेने की प्रक्रिया उस मानसिक और विचारात्मक प्रक्रिया को संदर्भित करती है जिसके माध्यम से वे चुनाव के समय विभिन्न राजनीतिक विकल्पों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और अंततः एक उम्मीदवार या पार्टी को अपना वोट देने का निर्णय लेते हैं। इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत, सामाजिक, और राजनीतिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसे कि उम्मीदवारों की छवि, पार्टी की नीतियाँ, मीडिया रिपोर्ट्स, और चुनावी प्रचार। फेक न्यूज़ इस प्रक्रिया को विकृत कर सकती है, क्योंकि यह जानबूझकर गलत, भ्रामक, या विकृत जानकारी प्रदान करती है, जो मतदाताओं को गुमराह करती है और उनके विचारों या विश्वासों को प्रभावित करती है।"

"मतदाताओं की निर्णय लेने की प्रक्रिया एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न प्रकार के कारक जैसे मीडिया रिपोर्ट्स, व्यक्तिगत अनुभव, सामाजिक प्रभाव और पार्टी नीतियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। चुनावी संदर्भ में, जब फेक न्यूज़ का प्रसार होता है, तो यह मतदाताओं के निर्णय को प्रभावित कर सकती है। फेक न्यूज़ का उद्देश्य आमतौर पर किसी विशेष उम्मीदवार या पार्टी के पक्ष में या विपक्ष में माहौल बनाना होता है। यह गलत जानकारी और विकृत तथ्यों के माध्यम से मतदाताओं को गुमराह करती है और उनके निर्णय को असंतुलित बना सकती है।"

"जब चुनावी प्रचार में फेक न्यूज़ का सहारा लिया जाता है, तो यह मतदाताओं को झूठी जानकारी प्रदान कर सकती है, जैसे कि किसी उम्मीदवार के बारे में अफवाहें फैलाना, गलत जानकारी देना या किसी पार्टी की नीतियों को गलत तरीके से प्रस्तुत करना। इस प्रकार की जानकारी न केवल मतदाता के सोचने के तरीके को प्रभावित करती है, बल्कि उनके विश्वास और चुनावी निर्णय पर भी गहरा असर डालती हैं " झूठी खबरें मतदाताओं की सोच को अत्यंत प्रभावित करती हैं जिसका प्रभाव चुनावी निर्णय पर दिखाई पड़ता है अगर मतदाता भ्रामक खबरों के आधार पर चुनाव प्रक्रिया में भाग लेते हैं तो चुनाव की निष्पक्षता पर गहरा आघात पहुंचता है जिससे चुनाव की प्रक्रिया भी विकृत दिखाई पड़ती है।

**राजनीतिक ध्रुवीकरण और सामाजिक प्रभाव**

"राजनीतिक ध्रुवीकरण (Political Polarization) उस स्थिति को संदर्भित करता है जब समाज के विभिन्न हिस्से, विशेष रूप से राजनीतिक दल और उनके समर्थक, एक दूसरे से दूर हो जाते हैं, और उनके विचार, दृष्टिकोण और प्राथमिकताएँ अत्यधिक विभाजित हो जाती हैं। यह प्रक्रिया चुनावों, नीति निर्धारण, और सामाजिक बहसों में बढ़ती असहमति का कारण बनती है। सामाजिक प्रभाव (Social Impact) वह प्रभाव है जो राजनीतिक विचारधारा के विभाजन का समाज में विभिन्न समुदायों, समूहों और व्यक्तिगत स्तर पर पड़ता है, जो समाज में विचारों, व्यवहारों और रिश्तों में टकराव और तनाव उत्पन्न कर सकता है।"

"राजनीतिक ध्रुवीकरण एक ऐसा सामाजिक और राजनीतिक परिघटना है, जिसमें समाज के विभिन्न हिस्से एक दूसरे से अलग होकर अपने विचारों और प्राथमिकताओं में अत्यधिक भिन्नता दर्शाते हैं। यह स्थिति विशेष रूप से चुनावी समय पर प्रकट होती है, जब राजनीतिक दल और उनके समर्थक अपने विरोधियों के खिलाफ नकारात्मक प्रचार करने के बजाय एक दूसरे से अधिक अलग हो जाते हैं। ध्रुवीकरण के कारण राजनीतिक बहसों और निर्णयों में संतुलन की कमी हो सकती है, जिससे समाज में असहमति और हिंसा का खतरा बढ़ सकता है।"

"राजनीतिक ध्रुवीकरण का सामाजिक प्रभाव गहरा और व्यापक होता है। समाज में बढ़ते विभाजन के कारण व्यक्तिगत और सामूहिक विचारों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। यह सामाजिक संबंधों को प्रभावित करता है, जिससे लोग एक-दूसरे से घृणा करने, अलगाव महसूस करने और संवाद की कमी का सामना कर सकते हैं। विशेष रूप से, यह पारिवारिक, समुदायिक और कार्यस्थल संबंधों को भी प्रभावित कर सकता है, क्योंकि लोग अपनी राजनीतिक धारा के आधार पर एक-दूसरे से कटने लगते हैं

डिजिटल क्रांति के बाद सामाजिक ध्रुवीकरण को अत्यंत बढ़ावा मिला है जिसका प्रमुख कारण झूठी खबरें हैं आज का मतदाता मनगढ़ंत खबरों को सत्य मान लेते हैं जिससे वह विरोधी विचारधारा के प्रति अपने व्यवहार को को कठोर कर लेते हैं जिससे लोकतंत्र को कमजोर होने का खतरा रहता है।

**चुनावी प्रक्रिया और निष्पक्षता पर प्रभाव**

"चुनावी प्रक्रिया (Electoral Process) वह प्रणाली है जिसके तहत चुनाव होते हैं और मतदाताओं को अपना मत देने का अवसर प्राप्त होता है। इसमें मतदान, उम्मीदवारों का चयन, मतदान की गिनती और परिणाम की घोषणा शामिल होती है। निष्पक्षता (Fairness) चुनावी प्रक्रिया में उन सभी तत्वों को संदर्भित करती है जो सुनिश्चित करते हैं कि चुनाव पारदर्शी, समान और सभी के लिए समान अवसर प्रदान करने वाला हो। जब चुनावी प्रक्रिया पर बाहरी प्रभाव, जैसे फेक न्यूज़, पक्षपाती प्रचार या असमान संसाधनों का उपयोग, पड़ता है, तो यह निष्पक्षता को नुकसान पहुंचा सकता है, जिससे लोकतांत्रिक मूल्य कमजोर हो सकते हैं।

"चुनावी प्रक्रिया और निष्पक्षता पर प्रभाव उस स्थिति को दर्शाता है जब किसी बाहरी तत्व, जैसे फेक न्यूज़, राजनीतिक दबाव या असमान संसाधनों का उपयोग, चुनावी परिणामों और निर्णय प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। निष्पक्ष चुनाव वह होते हैं जिनमें सभी उम्मीदवारों को समान अवसर प्राप्त हो और मतदाता बिना किसी भेदभाव के अपनी पसंद का प्रतिनिधि चुन सकें। जब चुनावी प्रक्रिया में भ्रष्टाचार, फेक न्यूज़ या पक्षपाती प्रचार का समावेश होता है, तो यह प्रक्रिया की निष्पक्षता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।" "फेक न्यूज़, जो चुनावी प्रचार में गलत, भ्रामक या विकृत सूचना फैलाती है, चुनावी निष्पक्षता को प्रभावित कर सकती है। उदाहरण के

लिए, अगर एक उम्मीदवार के खिलाफ झूठी अफवाहें फैलाई जाती हैं या किसी पार्टी की नीतियों को गलत तरीके से प्रस्तुत किया जाता है, तो यह मतदाताओं को गुमराह कर सकता है और चुनावी परिणामों को विकृत कर सकता है। ऐसे में, मतदाता सही जानकारी के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम नहीं होते, और चुनावी निष्पक्षता खतरे में पड़ जाती है।"

झूठी खबरों का चुनावी प्रक्रिया पर गहरा प्रभाव पड़ता है अनेकों राजनीतिक दल अपने दल को लाभ पहुंचाने तथा विरोधी दल को हानि पहुंचाने के लिए झूठी खबरो को अत्यंत तीव्रता से प्रसारित करते है जिसका परिणाम चुनावी प्रक्रिया और निष्पक्षता को प्रभावित करता है।

**लोकतांत्रिक संस्थाओं में अविश्वास**

"लोकतांत्रिक संस्थाओं में अविश्वास लोकतंत्र की कार्यप्रणाली पर गहरे और नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। जब नागरिकों को यह आभास होता है कि चुनावी प्रक्रिया, न्यायिक प्रणाली, या सरकार अपने कर्तव्यों का सही तरीके से पालन नहीं कर रही, तो इससे लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति अविश्वास पैदा होता है। यह अविश्वास चुनावों के परिणामों, सरकारी नीतियों, और कानूनी व्यवस्था के प्रति लोगों की निराशा को बढ़ाता है, और इससे राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक विघटन की संभावना बढ़ सकती है।"

"फेक न्यूज़, पक्षपाती मीडिया, भ्रष्टाचार, और असमानता जैसी समस्याएं लोकतांत्रिक संस्थाओं में अविश्वास के प्रमुख कारण बन सकती हैं। जब लोग यह महसूस करते हैं कि चुनावी प्रक्रिया निष्पक्ष नहीं है या उन्हें सही जानकारी नहीं मिल रही, तो वे लोकतांत्रिक प्रणालियों में विश्वास खो देते हैं। इसके परिणामस्वरूप, नागरिक चुनावों में भाग नहीं लेते, या वे वैकल्पिक राजनीतिक विचारधाराओं या आंदोलन का समर्थन करने लगते हैं, जिससे लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थिरता खतरे में पड़ सकती है।"

झूठी खबरें केवल मतदाता तथा उम्मीदवारों को ही प्रभावित नहीं करती बल्कि यह खबरें न्यायपालिका, मीडिया, चुनाव आयोग जैसी प्रमुख संस्थानों को भी अत्यंत प्रभावित करती हैं जिसका परिणाम यह है कि नागरिकों को इन लोकतांत्रिक संस्थाओं पर विश्वास कम होने लगा है जिससे लोकतंत्र की नीव कमजोर होने लगी है।

**फेक न्यूज़ के प्रसार के माध्यम**

**परिभाषा:** "फेक न्यूज़ के प्रसार के माध्यम वे प्लेटफ़ॉर्म, तकनीकी चैनल और सामाजिक संरचनाएँ हैं, जिनके माध्यम से झूठी, भ्रामक या विकृत जानकारी व्यापक रूप से फैलाई जाती है। ये माध्यम अत्यधिक प्रभावशाली होते हैं, क्योंकि वे सूचना के तेजी से प्रसार की अनुमति देते हैं और इससे जनसमूहों तक पहुँचने में सहायता करते हैं। फेक न्यूज़ के प्रसार में सोशल मीडिया, पारंपरिक मीडिया, व्हाट्सएप, टेलीविजन, और यहां तक कि व्यक्तिगत नेटवर्क भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।"

"फेक न्यूज़ के प्रसार के विभिन्न माध्यम होते हैं, जिनके द्वारा झूठी सूचना और भ्रामक प्रचार तेजी से फैलता है। इनमें प्रमुख रूप से डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, पारंपरिक मीडिया, और व्यक्तिगत संचार चैनल शामिल हैं। प्रत्येक माध्यम का प्रभाव और भूमिका भिन्न हो सकती है, लेकिन इन सभी में एक समानता यह है कि वे सूचना के प्रसार को तीव्र और व्यापक बनाते हैं, जो समाज में भ्रम और गलत धारणाओं को उत्पन्न कर सकता है।"

**प्रमुख प्रसार माध्यम: सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स:** सोशल मीडिया, जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, और यूट्यूब, फेक न्यूज़ के प्रसार के सबसे प्रभावी और प्रमुख चैनल हैं। इन प्लेटफ़ॉर्म्स पर, लोग अपनी जानकारी को बड़े पैमाने पर साझा करते हैं, और फेक न्यूज़ तेज़ी से वायरल हो जाती है। इन

प्लेटफ़ॉर्म्स पर तथ्य जांच की कमी और सीमित मॉडरेशन के कारण, यह जानकारी आसानी से फैल जाती है। शोध से यह भी सामने आया है कि फेक न्यूज़ पारंपरिक समाचारों की तुलना में अधिक तेजी से फैलती है।

**व्हाट्सएप और मैसेजिंग ऐप्स:** व्हाट्सएप जैसे निजी मैसेजिंग प्लेटफ़ॉर्म्स फेक न्यूज़ के प्रसार का एक और प्रमुख माध्यम हैं। इन प्लेटफार्म्स पर, समूह चैट और व्यक्तिगत संदेशों के माध्यम से फेक न्यूज़ त्वरित और बड़े पैमाने पर फैलती है। इन ऐप्स में जानकारी की सत्यता की जांच की कोई प्रणाली नहीं होती, और अधिकांश संदेश निजी होते हैं, जिससे यह अधिक प्रभावी और विश्वसनीय प्रतीत होते हैं।

**पारंपरिक मीडिया:** समाचार पत्र, टेलीविजन चैनल और रेडियो भी फेक न्यूज़ के प्रसार में शामिल हो सकते हैं, खासकर जब वे बिना सत्यापन के सनसनीखेज या पक्षपाती खबरें प्रस्तुत करते हैं। कभी-कभी, मीडिया संस्थाएं राजनीतिक दबाव या व्यापारिक लाभ के चलते गलत जानकारी प्रसारित करती हैं, जिससे समाज में भ्रम पैदा होता है। हालांकि पारंपरिक मीडिया में अधिक मॉडरेशन होता है, फिर भी फेक न्यूज़ प्रसारण का यह एक महत्वपूर्ण चैनल है।

**ब्लॉग्स और वेबसाइट्स:** इंटरनेट पर कई ऐसी वेबसाइट्स और ब्लॉग्स होते हैं, जो जानबूझकर भ्रामक या झूठी जानकारी प्रस्तुत करते हैं। इन साइट्स पर प्रकाशित खबरें अक्सर सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से वायरल हो जाती हैं। चूंकि ये वेबसाइट्स अधिकतर बिना किसी संपादकीय निगरानी के काम करती हैं, इसलिए फेक न्यूज़ का प्रसार बहुत तेज़ी से होता है।

**इन्फ्लुएंसर्स और सार्वजनिक व्यक्तित्व:** सोशल मीडिया पर इन्फ्लुएंसर्स और सार्वजनिक व्यक्तित्व (जैसे नेता, अभिनेता, या अन्य प्रमुख व्यक्ति) भी फेक न्यूज़ के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये व्यक्ति अपनी बड़ी फॉलोइंग के माध्यम से जानकारी साझा करते हैं, जो उनके अनुयायियों द्वारा बिना सत्यापन के आसानी से स्वीकार की जाती है, जिससे जानकारी का दायरा और प्रभाव बढ़ जाता है।

**फेक न्यूज़ को रोकने के उपाय:** "फेक न्यूज़ को रोकने के उपाय वे रणनीतियाँ और प्रक्रियाएँ हैं, जो झूठी, भ्रामक या विकृत जानकारी के प्रसार को नियंत्रित करने और सीमित करने के लिए अपनाई जाती हैं। इन उपायों का उद्देश्य समाज में सूचना की सटीकता और विश्वसनीयता को बढ़ावा देना और गलत जानकारी के प्रभाव को कम करना है। यह प्रयास केवल सरकारों या मीडिया संस्थानों द्वारा नहीं बल्कि समाज के सभी स्तरों पर सामूहिक जिम्मेदारी के रूप में होने चाहिए।"

"फेक न्यूज़ के प्रसार को रोकने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें तकनीकी उपायों, शैक्षिक कार्यक्रमों, और कानूनी व्यवस्थाओं का समावेश हो। इन उपायों का उद्देश्य केवल झूठी जानकारी का फैलाव रोकना नहीं है, बल्कि समाज में सत्य, सत्यापन और जिम्मेदार जानकारी साझा करने के सिद्धांतों को भी बढ़ावा देना है।"

**सूचना सत्यापन और फैक्ट-चेकिंग प्लेटफ़ॉर्म्स:** फेक न्यूज़ के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए फैक्ट-चेकिंग प्लेटफ़ॉर्म्स महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन प्लेटफ़ॉर्म्स पर विशेषज्ञ जानकारी का सत्यापन करते हैं, और झूठी खबरों का पर्दाफाश करते हैं। सरकारों और मीडिया संस्थानों को ऐसे प्लेटफ़ॉर्म्स को समर्थन देना चाहिए ताकि लोग जानकारी प्राप्त करते समय उनकी सत्यता की जांच कर सकें। उदाहरण के तौर पर, 'पोलिटिफैक्ट' और 'फैक्टक्लिक' जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स हैं जो वायरल हो रही खबरों की सटीकता की जांच करते हैं।

**सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स पर निगरानी और पारदर्शिता:** सोशल मीडिया पर फेक न्यूज़ का

प्रसार एक प्रमुख चिंता का विषय है। सोशल मीडिया कंपनियों को अधिक जिम्मेदार बनाना और झूठी जानकारी के प्रसार पर नियंत्रण के लिए प्रभावी मॉडरेशन सिस्टम्स को लागू करना आवश्यक है। उदाहरण स्वरूप, फेसबुक और ट्विटर जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स को गलत जानकारी को हटाने, फेक अकाउंट्स को ब्लॉक करने और अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के लिए अधिक पारदर्शिता दिखानी चाहिए।

**सूचना साक्षरता (Media Literacy) को बढ़ावा देना:** फेक न्यूज़ से लड़ने का सबसे प्रभावी तरीका समाज को सूचना साक्षर बनाना है। स्कूलों, कॉलेजों और अन्य शैक्षिक संस्थानों में सूचना साक्षरता पाठ्यक्रमों को अनिवार्य किया जाना चाहिए, जिससे लोग यह समझ सकें कि कैसे विभिन्न मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स से जानकारी प्राप्त की जाती है, और कैसे वे सही और गलत जानकारी को पहचान सकते हैं। इसके अलावा, लोगों को यह सिखाना चाहिए कि फेक न्यूज़ के प्रभावों से कैसे बचा जा सकता है।

**कानूनी प्रावधानों और दंडात्मक कार्रवाई:** फेक न्यूज़ को फैलाने वालों के खिलाफ कड़े कानूनी प्रावधानों का होना आवश्यक है। यदि कोई व्यक्ति जानबूझकर झूठी जानकारी फैलाता है, जो समाज में भय या नफरत उत्पन्न करती है, तो उस पर दंडात्मक कार्रवाई की जा सकती है। भारत जैसे देशों में कुछ राज्यों ने इस संदर्भ में सख्त कानून लागू किए हैं, जैसे कि सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स पर गलत जानकारी फैलाने पर जुर्माना और सजा का प्रावधान।

**प्रेस और मीडिया संस्थानों के लिए जिम्मेदार रिपोर्टिंग:** मीडिया संस्थानों को फेक न्यूज़ के प्रसार को रोकने के लिए अपनी जिम्मेदारी को गंभीरता से लेना चाहिए। उन्हें केवल सनसनीखेज और चौंकाने वाली खबरें प्रसारित करने के बजाय, तथ्यों की पुष्टि करने और सटीक जानकारी देने पर जोर देना चाहिए। इसके अलावा, उन्हें किसी खबर को प्रकाशित करने से पहले उसकी सटीकता की पुष्टि करनी चाहिए।

**नागरिक समाज और समुदाय आधारित पहलकदमियाँ:** नागरिक समाज और समुदायों को फेक न्यूज़ से निपटने के लिए सक्रिय रूप से शामिल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। स्थानीय संगठनों और समूहों को जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए, जिसमें उन्हें यह बताया जाए कि वे कैसे झूठी खबरों को पहचान सकते हैं और अपने समुदायों में सही जानकारी का प्रचार कर सकते हैं।

**आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग का उपयोग:** टेक्नोलॉजी का उपयोग भी फेक न्यूज़ के प्रसार को रोकने में सहायक हो सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML) आधारित टूल्स का उपयोग कर के सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स पर फैल रही झूठी जानकारी की पहचान की जा सकती है। इन तकनीकों के जरिए, प्लेटफ़ॉर्म्स पर कंटेंट को स्वचालित रूप से स्कैन किया जा सकता है और झूठी जानकारी को फैलने से पहले ही हटाया जा सकता है।

## निष्कर्ष

फेक न्यूज़ का चुनावी लोकतंत्र पर प्रभाव एक जटिल और गंभीर समस्या है, जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की निष्पक्षता, पारदर्शिता और सटीकता को चुनौती देता है। जैसे-जैसे समाज डिजिटल माध्यमों और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स का अधिक उपयोग करने लगा है, वैसे-वैसे फेक न्यूज़ का प्रसार भी तेजी से बढ़ा है, जो चुनावी प्रक्रिया के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करता है। चुनावी लोकतंत्र का उद्देश्य नागरिकों को सूचित विकल्पों के आधार पर मतदान करने का अवसर देना होता है, लेकिन फेक न्यूज़ इस प्रक्रिया को विकृत कर सकती है।

फेक न्यूज़ चुनावी लोकतंत्र के लिए एक गंभीर चुनौती है, क्योंकि यह लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को विकृत करने, मतदाताओं की सूचित निर्णय लेने की क्षमता को बाधित करने, और चुनावी

निष्पक्षता को कमजोर करने का कारण बनती है। इसके प्रभाव से लोकतांत्रिक संस्थाओं पर अविश्वास बढ़ता है, और चुनावी प्रक्रिया की वैधता पर सवाल उठते हैं। इसके समाधान के लिए, सूचना की सत्यता की जांच, मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देने, और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स पर निगरानी बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाए रखने के लिए कानूनी प्रावधानों और दंडात्मक कार्रवाई की आवश्यकता है। फेक न्यूज़ से निपटने के लिए समग्र और सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती और विश्वास को बनाए रखा जा सके।

फेक न्यूज़ आधुनिक लोकतंत्र के लिए एक गंभीर खतरा है, जो चुनावी प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकता है और जनता को गलत दिशा में ले जा सकता है। इस समस्या से निपटने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें सरकारी नीतियाँ, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की जिम्मेदारी, मीडिया साक्षरता और स्वतंत्र फैक्ट-चेकिंग संस्थानों की सक्रिय भागीदारी शामिल हो। यदि लोकतंत्र को मजबूत रखना है, तो नागरिकों को सही जानकारी तक पहुँच सुनिश्चित करनी होगी और फेक न्यूज़ के खिलाफ सतर्क रहना होगा।

## संदर्भ सूची


1. वास्तविक खतरा इन ऑनलाइन झूठों के कारण नागरिकों के लोकतंत्र पर पड़ने वाले विनाशकारी प्रभाव में छिपा है।“
2. डॉ. मेर्टन रेग्लिट्ज़, सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ ग्लोबल एथिक्स
3. फ़ेक न्यूज़ का विज्ञान”
4. लेज़र, डेविड एमजे; एट अल. साइंस, मार्च 2018. DOI: 10.1126/science.aao2998.
5. 2016 के चुनाव में सोशल मीडिया और फर्जी खबरें”
6. ऑलकॉट, हंट; जेंट्ज़कोव, मैथ्यू। नेशनल ब्यूरो ऑफ़ इकोनॉमिक रिसर्च के लिए वर्किंग पेपर, नंबर 23089, 2017।
7. घटनाओं के बारे में गलत सूचना को हटाना: कारणात्मक सुधारों का एक प्रायोगिक परीक्षण”
8. नाहन, ब्रेंडन; रीफलर, जेसन। जर्नल ऑफ एक्सपेरीमेंटल पॉलिटिकल साइंस, 2015. Doi: 10.1017/XPS.2014.22.
9. जब फर्जी खबरें सच हो जाती हैं: कई समाचार स्रोतों के लिए संयुक्त जोखिम और अकुशलता, अलगाव और निराशावाद के राजनीतिक दृष्टिकोण”
10. बालमास, मीटल। संचार अनुसंधान, 2014, खंड 41.
    Doi: 10.1177/0093650212453600
11. फ़ेकिंग सैंडी: तूफ़ान सैंडी के दौरान ट्विटर पर फ़र्जी छवियों की पहचान और विशेषताएँ”गुप्ता, अदिति; लांबा, हेमंक; कुमारगुरु, पोन्नुरंगम; जोशी, अनुपम। वर्ल्ड वाइड वेब पर 22वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही, 2013.
    Doi: 10.1145/2487788.2488033
12. फेक न्यूज़’ के बारे में वास्तविक समाचारों का प्रभाव: अंतःपाठीय प्रक्रियाएँ और राजनीतिक व्यंग्य”
13. ब्रेवर, पॉल आर.; यंग, डैनगल गोल्डथवेट; मोरेले, मिशेल। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पब्लिक ओपिनियन रिसर्च, 2013.
    Doi: 10.1093/ijpor/edt015.
14. How AI Threatens Democracy
15. Sarah Kreps, Doug Kriner
16. Journal of Democracy
17. Johns Hopkins University Press
18. Volume 34, Number 4, October 2023